वैज्ञानिक प्रबंध : एफ. डब्ल्यू. टेलर (F. W. Taylor)

Dr. Vijay Kumar Choubey
Department of Commerce, Durga Mahavidyala, Raipur (C.G.)

परिचय और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

एफ. डब्ल्यू. टेलर का जीवन परिचय

जन्म : 20 मार्च 1856, फिलाडेल्फिया (अमेरिका)

शिक्षा : इंजीनियरिंग (Stevens Institute of Technology)

कैरियर : मिडवेल स्टील कंपनी (Midvale Steel), बेथलहम स्टील कंपनी

उपाधि : "वैज्ञानिक प्रबंध का जनक"

औद्योगिक समस्या (Problems)

- कर्मचारियों का सोल्जरिंग (काम में जानबूझकर सुस्ती)
- औद्योगिक कार्य पारंपरिक और असंगठित
- उत्पादन क्षमता का कम उपयोग
- वैज्ञानिक प्रबंध का उद्भव
- टेलर ने महसूस किया कि कार्य को करने का एक "सबसे अच्छा तरीका" होता है।
- उन्होंने वैज्ञानिक आधार पर कार्य विभाजन, समय अध्ययन, गति अध्ययन और मानकीकरण पर बल दिया।

वैज्ञानिक प्रबंध की परिभाषा

टेलर के अनुसार :

"Scientific Management का अर्थ है— कार्य को करने के सर्वोत्तम तरीके का वैज्ञानिक अध्ययन और उसे व्यवहार में लाना ताकि उत्पादकता बढ़े, लागत घटे और कार्यकुशलता बढ़े।"

अन्य विद्वानों की परिभाषाएँ :

पीटर एफ. ड्रकर : "Scientific Management श्रमिक की दक्षता बढ़ाने की संगठित प्रक्रिया है।"

हेनरी फेयोल : "यह प्रबंधन में तर्क और प्रयोग का वैज्ञानिक दृष्टिकोण है।"

गिलब्रिथ : "मानव श्रम को सबसे कम थकान और समय में अधिकतम उत्पादन हेतु व्यवस्थित करना।"

टेलर के मुख्य सिद्धांत (PRINCIPLES OF SCIENTIFIC MANAGEMENT)

Science, Not Rule of Thumb
काम अनुमान या परंपरा से नहीं बल्कि वैज्ञानिक विश्लेषण से हो।

Harmony, Not Discord
प्रबंधक और कर्मचारियों में तालमेल व सहयोग होना चाहिए।

Cooperation, Not Individualism
सामूहिक कार्य और आपसी विश्वास से दक्षता बढ़ती है।

Development of Each Worker
हर कर्मचारी का प्रशिक्षण और क्षमता विकास होना चाहिए।

Equal Division of Responsibility
योजना और कार्यान्वयन का उचित बँटवारा।

टेलर द्वारा प्रतिपादित तकनीकें (TECHNIQUES OF SCIENTIFIC MANAGEMENT)

समय अध्ययन (Time Study):
किसी कार्य को करने में लगने वाले सही समय का मापन।
जैसे— एक काम पूरा करने में औसत 30 सेकंड लगते हैं।

गति अध्ययन (Motion Study):
कार्य करते समय शरीर की अनावश्यक गतियों को कम करना।
उद्देश्य : थकान घटाना और उत्पादकता बढ़ाना।

मानकीकरण (Standardization):
औजार, मशीन, कार्यविधि, समय और उत्पादन का मानकीकरण।

कार्यात्मक पर्यवेक्षण (Functional Foremanship):
प्रबंधन और निगरानी के लिए अलग–अलग विशेषज्ञ नियुक्त करना।
जैसे : Instruction Card Clerk, Repair Boss, Time Clerk, आदि।

अंतर वेतन प्रणाली (Differential Piece Rate System):
जो कार्य निर्धारित समय पर पूरा करे उसे अधिक वेतन।
सुस्त कर्मचारी को कम वेतन।

वैज्ञानिक प्रबंध के लाभ

- उद्योग के लिए लाभ
- उत्पादन बढ़ना
- लागत घटाना
- गुणवत्ता में सुधार
- प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढ़ना
- कर्मचारियों के लिए लाभ
- प्रशिक्षण और कौशल विकास
- प्रशिक्षण और कौशल विकास
- प्रोत्साहन आधारित वेतन
- कार्य का बेहतर वातावरण
- थकान कम
- समाज के लिए लाभ
- सस्ते और अच्छे उत्पाद
- रोजगार के अवसर
- राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि

वैज्ञानिक प्रबंध की सीमाएँ / आलोचनाएँ

- **मानव को मशीन समझना –** भावनाओं और सामाजिक पक्ष की उपेक्षा।
- **थकान और दबाव –** अधिकतम कार्य कराने का प्रयास।
- **श्रमिक संघों का विरोध –** श्रमिक इसे शोषणकारी मानते थे।
- **प्रबंधन और श्रमिकों में अविश्वास –** Differential Wage System विवादास्पद रहा।
- **व्यावहारिक कठिनाई –** हर उद्योग में लागू करना संभव नहीं।

मार्क्सवादी आलोचना:

टेलर ने पूँजीपतियों का पक्ष लिया और श्रमिकों को मात्र उत्पादन का साधन समझा।

आधुनिक प्रासंगिकता और निष्कर्ष

आधुनिक प्रासंगिकता

आज भी Work Study, Quality Control, Training, Incentive Plans, Standardization में टेलर के सिद्धांत प्रयोग किए जाते हैं।

MNCs और बड़ी कंपनियाँ Performance Appraisal, Target Setting, Lean Manufacturing जैसी पद्धतियाँ अपनाती हैं।

निष्कर्ष:

टेलर का “वैज्ञानिक प्रबंध” प्रबंधन विज्ञान में मील का पत्थर है।
इसने उत्पादनशीलता और दक्षता का वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत किया।
यद्यपि इसमें मानवीय पक्ष की कमी थी, फिर भी इसने आधुनिक प्रबंध को दिशा दी।
इसलिए एफ. डब्ल्यू. टेलर को आज भी "वैज्ञानिक प्रबंध का जनक" कहा जाता है।